IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

तबला वादन के क्षेत्र में पंजाब घराना परम्परागत गतें एवं उनकी विशेषताएँ

दामिनी वर्मा(Damini Verma)
शोध छात्रा (संगीत विभाग)
दयालबाग शिक्षण संस्थान,
दयालबाग, आगरा–281005

पंजाब शब्द की व्युत्पत्ति :– पंजाब 'पंज' 'आब' पदों का यौगिक शब्द है। 'पंज' और 'आब' दोनों ही शब्द फारसी भाषा के हैं। उनके अर्थ क्रमशः 'पांच' और 'पानी' है। अस्तु पंजाब का अर्थ हुआ पांच पानी से सींची हुई भूमि। संस्क्रत में 'पंज' को पंच कहते हैं और 'आब' के ही अनुरूप 'आप' का अर्थ पानी होता है। अतएव विशुद्ध संस्क्रत में इस शब्द का रूपान्तर 'पंचाप' हुआ।

पंजाब का क्षेत्रफल व भौगोलिक स्थिति :– पंजाब प्रान्त के नाम से जाने वाले भू – भाग की सीमा विभिन्न विदेशी आक्रमणों के कारण समय – समय पर घटती बढ़ती रही है लेकिन कालान्तर में इसकी उत्तरी – पश्चिमी सरहदी सीमा हिन्दूकुश पर्वतश्रेणी तक ही रह गयी है। भारत – विभाजन के पश्चात उत्तरी – पश्चिमी सरहदी सूबा , आधा पंजाब , सिन्धु और बिलोचिस्तान के क्षेत्र भारतीय पंजाब से प्रथक हो गए। इस प्रकार पंजाब खण्डित होते – होते केवल तेरह छोटे–छोटे जनपदों तक ही सीमित रह गया जिनमें **अमृतसर , जालन्धर , लुधियाना , पठानकोट , गुरदास , होशियारपुर , फिरोजपुर , पटियाला** आदि सम्मिलित है।

पंजाब की सांस्कृतिक प्रष्ठभूमि :– सभ्यता एवं संस्कृति उस विशिष्ट स्थान की पहचान है जहाँ से उद्गम एवं विकास यात्रा प्रारम्भ होती है। किसी भी प्रदेश व समाज की संस्कृति का परिचय वहाँ के लोगों के द्वारा सदियों से चली आ रही रीति – रिवाज , लोक संस्कृति व शैली के माध्यम से प्राप्त होता है।व वहाँ की संस्कृति निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से दृष्टव्य होती है। **पंजाब की भाषा, बोलियाँ** (i) **माझी** (ii) **दुआबी** (iii) **मालवी अथवा मलवई** (iv)**पुआधी** (v) **भटियाणी।, पंजाब का लोक – जीवन, पर्व – उत्सव – मेले, मनोरंजन के साधन, वेशभूषा, आभूषण, गायन, वादन, नृत्य।**

पंजाब जो कि अपनी उर्वरा क्षमता के कारण विश्व में अपना स्थान रखता ही है वहीं संगीत के क्षेत्र में भी अपना अद्भुत व अतुलनीय योगदान रखता है। पंजाब के वातावरण का प्रभाव वहाँ के संगीत में भी स्पष्ट दृष्टिगत होता है। जैसे :– पंजाब में प्रचलित गायन शैलियों के माध्यम से , वहाँ की लोक कथाओं पर आधारित कविताओं व बन्दिशों के माध्यम से , विभिन्न वाद्यों की वादन शैली में इत्यादि।

जैसा कि हम जानते ही हैं कि तबला वाद्य अत्यन्त प्रचलित व महत्वपूर्ण अवनद्ध वाद्य है अतः पंजाब प्रान्त में बज रहे तबला वाद्य की वादन शैली व उसकी वंश परम्परा का विवरण निम्नवत् है :–

पंजाब घराना

पंजाब घराने के संस्थापक **लाला भवानीदास** थे। प्रसिद्ध पखावज वादक लाला भवानी दास के नाम के विषय में काफी मत–मतान्तर प्राप्त होते हैं। उन्हें कोई **भवानी दास, भवानी दीन** व **भवानी सिंह** कहते हैं। 'मअदन–उल–मूसिकी', 'राग दर्पण' तथा अन्य पुस्तकों के अनुसार ताज खाँ डेरेदार तथा कुदऊ सिंह पखावजी, दोनों ने लाला भवानी दास से ही सीखा था। अतः दोनों घरानों के प्रवर्तक एक ही व्यक्ति लाला भवानी दास हैं अन्तर केवल इतना है कि पंजाब घराने के लोग भवानी दास तो अन्य घराने के लोग भवानी दीन कहते हैं।

बृज के श्री छेदा लाल टीकाराम पखावजी द्वारा बल्लभ सम्प्रदाय की 'गर्ग संहिता' पुस्तक के आधार पर लिखे गये बृज के पखावजियों के इतिहास की हस्तलिपि के अनुसार लाला भवानी दास बृज के निवासी थे व मोहम्मद शाह रंगीले के समय में **दिल्ली दरबार** के कलाकार थे व एक कुशल सुविख्यात पखावज वादक थे।लाला भवानी दास के विषय में यह मत प्राप्त होता है कि इन्होंने अपने **खास – उल – खास** शिष्यों को पखावज की शिक्षा प्रदान की बाकि शिष्यों को पंजाब प्रान्त में बजने वाले दुक्कड़ वाद्य की शिक्षा प्रदान की अतः इस परम्परा की वादन शैली पर पखावज वाद्य का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगत होना स्वभाविक है। और यही कारण है कि पंजाब की बन्दिशों में नाद का अधिक खुलापन है व ज़ोरदार बोलों की आधिक्यता है। प्रसिद्ध पखावज वादक लाला भवानी दास के मुख्य पाँच शिष्य हुए जिनके द्वारा इस परम्परा का विकास हुआ।

- मियां कादिर बख्श।
- हद्दू खाँ लाहौर वाले।
- ताज खाँ डेरेदार।
- अमीर अली।
- नाम अज्ञात।

लाला भवानी दास के प्रथम शिष्य **कादिर बख्श** (प्रथम) थे व इनसे जिस परम्परा का प्रसार हुआ उसमें इनसे पुत्र **मियां हुसैन बख्श**, पौत्र **मियां फकीर बख्श** एवं शिष्य **भाई बाग** थे। **फकीर बख्श** के पुत्र **कादिर बख्श** (द्वितीय) तथा शिष्यों में **उ0 करम इलाही, मीरा बख्श घिलवालिए, बाबा शिन्धी, भाई राखा, फिरोज खाँ (लाहौर वाले), मेहबूब बख्श, बम्बू खाँ (सहारनपुर वाले), बाबा मलंग** हैं। **कादिर बख्श द्वितीय** की शिष्य व प्रशिष्य परम्परा में **महाराज टीकमगढ़, लाल मोहम्मद खाँ, मेहबूब बख्श, जतिन बख्श, शादिक हुसैन, भाई नसिरा, अल्ला धेत्ता, अल्ला रक्खा, बाबा शिन्धी, राजा चक्रधर जु देव, अख्तर हुसैन खाँ (भतीजा), फकीर बख्श दुमगड़िया, भाई राखा, लक्ष्मण सिंह सीन, मदन सिंह पवार, फकीर मोहम्मद, शरीफ अहमद, पंढरीनाथ नागेश्वर, पवन कुमार वर्मा, मनमोहन शर्मा, कलाराम , उ0 ज़ाकिर हुसैन, फज़ल कुरेशी, तारिक कुरेशी, शंखो चटर्जी, हरि चट्टोपाध्याय, अब्दुल सत्तार, शराफत खाँ, विनायक इंगले, डी0 आर0 नेरूलकर, अशोक गॉडबोले, नसीर अहमद ,सुबोध मुखर्जी ,अशीम चौधरी, जीनादास, विनायक खारकर, नसीर, बंशीलाल, मेरी जान्सन ,जेन्सी, अनुराधा पॉल, योगेश शम्सी** इत्यादि।

लाला भवानीदास के दूसरे शिष्य **हद्दू खाँ लाहौर वाले** की वंश परम्परा का विस्तृत इतिहास हमें प्राप्त नहीं होता है क्योंकि इनकी वंश परम्परा पाकिस्तान में फैली हुई है।

लाला भवानीदास के तीसरे शिष्य **ताज खाँ डेरेदार** के द्वारा इस परम्परा का जो निर्वाह हुआ उसमें उनके **पुत्र नासिर खाँ पखावजी** का नाम प्रमुख है। **उ0 नासिर खाँ पखावजी** बड़ोदरा (गुजरात) दरबार के मुख्य कलाकारों में से एक रहे व इनकी शिष्य व प्रशिष्य परम्परा बड़ोदरा में फैली जिनमें इनके पुत्र **निसार हुसैन, कान्ता प्रसाद, नज़ीर खाँ (पौत्र), नरहरि शम्भूराव भावे , गोविन्द प्रसाद , विष्णु पन्त जोशी , हिम्मत राव बख्शी , गनपत राव ,कृष्ण कान्त शिलेधर** का नाम उल्लेखनीय है।

लाला भवानीदास के चौथे शिष्य **अमीर अली** थे। दुर्भाग्यवश इनकी वंश परम्परा के विषय में कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता है।

इनके पाँचवें शिष्य का नाम **अज्ञात** है इनके शिष्य व प्रशिष्यों में **भवानी प्रसाद, मक्खन लाल, गिरधर प्रसाद, प्रीतमदास, छुट्टन लाल, बाबूलाल, शंकर लाल (हैदराबाद), राम स्वरूप, शंकर राव शिन्दे।**

पंजाब घराने की विशेषताएँ

1 पखावज वाद्य का अत्यधिक प्रभाव होने के कारण पंजाब की बन्दिशों में ज़ोरदारी व थाप का प्रयोग अधिक होता है।

2 यह घराना **गत** व **परन** के वादन प्रकारों के लिए प्रसिद्ध है।

3 इस घराने में लयकारियों व गणितीय सिद्धान्तों से युक्त वादन प्रकारों का वादन अत्यधिक किया जाता है।

4 पंजाब घराने की बन्दिशों पर वहाँ की भाषा का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगत होता है जैसे 'धाती' के स्थान पर 'धात' का उच्चारण करना व धिरधिरकत के स्थान पर धेरधेरकेट का उच्चारण इत्यादि।

5 बाँये अर्थात ढग्गे पर मींड युक्त वादन भी इस घराने की अपनी एक निजी विशेषता है। **6** बन्दिशों में **धड़ान , तड़ान, धाड़ागेन , धेरधेरकेट , तकघेड़ाऽन , धुमकेटतक , धेरकेटतक, धातीनाड़ा, धातीधाड़ा** इत्यादि बोलों का प्रयोग होता है।

7 पंजाब घराने की **गतों** व **परनों** में ज़ोरदारी व स्याहीयुक्त बोलों की आधिक्यता रहती है।

एकताल

कतधाऽ केटतक । तकेटधा ऽड़धागे। तेरकेट धिंऽऽऽ। धिंऽधिंऽ धिंऽघेऽ। घेऽतड़ा

x 0 2 0 3

ऽनधागे । तेटेकता कत । कत्ततेटे घेघेतेटे । कताऽन धेन्ना । धेटे कता 4

x 0 2

कतधेरधेर केटतकतकेट । धाऽधेरधेर केटतकतकेट । धाऽधेरधेर केटतकतकेट । धा 0

3 4 x

विशेषताऐं :–

- प्रस्तुत गत **मियां कादिर बख्श खाँ साहब** की बंदिश है।
- यह गत **चतस्त्र जाति** में निबद्ध है। जिसमें **दुगुन** व **चौगुन** की लय का समावेश है।
- उक्त गत में पंजाब की भाषा प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। यथा – **धिरधिरकिटतक** के स्थान पर **धेरधेरकेटतक** बोल का उच्चारण करना।
- पंजाब बाज की वादन शैली में पखावज का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है यथा – **तकेटधाऽड़धागे** , **घेतड़ाऽनधागे** यह उक्त गत में कुशलतापूर्वक संयोजित किया गया है।
- बाँये पर मींड का प्रयोग स्पष्ट देखा जा सकता है। यथा – **धिंऽधिंऽ** , **धिंऽघेऽ**

तीनताल

धागे ऽऽतेरकेट धागे ऽऽतेटे । कता ऽऽ घेनातूना केट ।
x 2
केड़नग तेरकेट ताकत्त धाधी । नाक ऽत धड़ा ऽन ।
3 0
घेड़ नग धेरधेरकेटतक तातेरकेटतक । तकेटधाऽ ऽऽऽके ऽऽधेरधेर केटतकतकेट ।
X 2
धाऽऽऽ ऽकेऽऽ ऽऽधेरधेर केटतकतकेट । धाऽऽऽ ऽकेऽऽ ऽऽधेरधेर केटतकतकेट । धा
3 0 x

विशेषताऐं :–

- प्रस्तुत गत **मियां शौकत हुसैन खाँ साहब** की गत है।
- उपरोक्त गत में ज़ोरदार बोलों का समावेश स्पष्ट रूप से दिग्दर्शित होता है जैसे :– धड़ाऽन , घेनातूना , धेरधेरकेटतक ।
- बोलों के मध्य अनाघात सौन्दर्य प्रस्तुत गत को विशिष्टता प्रदान करता है।
- उक्त गत न केवल वादन की दृष्टि से अपितु पढ़न्त में भी एक विशेष आकर्षण उत्पन्न कर तबला वादन के सौन्दर्य पक्ष को प्रबल करती है।

लाहौरी गत
तीनताल

दिंऽदिंऽतेटेतेटे घेघेतेटेतेटेदिंऽ क्रधेत्धेनगधेन तेरकेटताऽनकत । धाऽऽऽधान
x 2
धेटेकता कतधेरधेरकेटतकतकेट धाऽधेरधेरकेटतकतकेट । धाऽऽऽधेरधेरकेटतक
0
तकेटधाऽऽऽधेरधेर केटतकतकेटधाऽदिंऽ दिंऽतेटेतेटेघेघे । तेटेघेघेदिंऽक्रधे
3
त्धेनगधेनतेरकेट ताऽनकतधाऽ ऽऽधानधे । टेकताकत धेरधेरकेटतकतकेटधाऽ
x धेरधेरकेटतकतकेटधाऽ ऽऽधेरधेरकेटतकतकेट ।
धाऽऽऽधेरधेरकेटतक तकेटधाऽदिंऽदिंऽ 2
तेटतेटघेघेतेट घेघेदिंऽक्रधेत्धे । नगधेनतेरकेटताऽ नकऽतधाऽऽऽ धानधेटे
0
कताकतधेरधेर । केटतकतकेटधाऽधेरधेर केटतकतकेटधाऽऽऽ धेरधेरकेटतकतकेटधा
3
ऽऽधेरधेरकेटतकतकेट । धा
x

विशेषताऐं :–

- प्रस्तुत गत **लाहौरी गत** है व **उ0 ज़ाकिर हुसैन खाँ साहब** की बंदिश है।
- उक्त गत चक्रदार गत है जिसमें गत का एक पल्ला 21 1/2 मात्रा का है जो कि पंजाब घराने के गणितीय सिद्धान्त व लयकारियों को स्पष्ट दृष्टिगत करता है।
- उपरोक्त गत **चतस्त्र जाति** की गत है जिसमें **दुगुन** व **चौगुन** की लय का समावेश है।
- उक्त गत में **धेरधेरकेटतक** बोल का प्रयोग आधिक्यता से किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1 मिस्त्री डॉ0 आबान ई – पखावज और तबले के घराने एवं परम्परायें।

2 पैन्तल गीता – पंजाब की संगीत परम्परा।

3 ताल कोश :– प्रो0 गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव ।

4 तबला वादन कला और शास्त्र :– श्री सुधीर माईणकर।

5 ताल प्रसून :– पं0 छोटेलाल मिश्र।

6 तबला कौमुदी :– डॉ0 रामशंकर 'पागलदास'।